भजन

तर्ज– कहे तोसे सजना

कहे तोसे दूल्हा,ये तोहरी दुल्हनियां
माया के फंद छुड़ा के,धाम को चलो ना

1–मूल मिलावे में बैठी रूहें सारी,तिलसम में सुरता उनकी उतारी
जुदा जुदा होकर बैठी ये निजवतनियां

2– बैठी झूठ को सांच बना के,भूली है कौल वो धाम से आके
वतन भुलाया अपनाया सपना

3– आखिर तो रूहें तन हैं तिहारी,लाड में भूली जो साहेबी तुम्हारी
इश्क लौटा दो अपना हमसे जो छीना

4– वाणी लेकर खुद आए,निसवत धाम की याद दिलायें
वाणी से मिलता है निजसुख अपना

5– हारी हैं हारी रूहें तिहारी,अब तो जगाओ परआत्म हमारी
खत्म करो पिया झूठा ये सपना